दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड
DSSSB PRT, TGT & PGT
ROJGAR
ANKIT
Part(A+B)
SCHOLAR BATCH
हिन्दी
आधुनिक काल
Part -3
LIVE
26-06-2024 09:00 AM

रायदेवी प्रसाद 'पूर्ण'

रायदेवी प्रसाद जी का जन्म जबलपुर में हुआ था।

हिन्दी साहित्य में 'पूर्ण' जी की ख्याति ब्रजभाषा काव्य परम्परा के अत्यन्त प्रौढ़ और सिद्ध कवि के रूप में है।

रचनाएँ

स्वदेशी कुण्डल (खड़ी बोली में कुण्डलियाँ)

धाराधर धावन (मेघदूत का ब्रजभाषा पद्य में अनुवाद) चन्द्रकला

भानुकुमार (मौलिक सुखान्त नाटक)

राम रावण - विरोध (चम्पूकाव्य)

रामचरित उपाध्याय

श्री रामचरित उपाध्याय का जन्म उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले में हुआ था।

प्रारम्भ में ये ब्रजभाषा में कविता लिखते थे। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी के प्रोत्साहन से इन्होंने खड़ी बोली में रचना प्रारम्भ की और इनकी रचनाएँ 'सरस्वती' तथा हिन्दी के अन्य पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने लगी।

प्रमुख रचनाएँ

देवदूत, देवसभा, देवी द्रौपदी, विचित्र विवाह, राष्ट्र भारती, भारत भक्ति, भव्य भारत ।

गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही'

हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल के द्विवेदी युगीन साहित्यकार हैं। इन्होंने 'सनेही' उपनाम से कोमल भावनाओं की कविताएँ', त्रिशूल' उपनाम से राष्ट्रीय कविताएँ तथा 'तरंगी' एवं 'अलमस्त' उपनाम से हास्य-व्यंग्य की कविताएँ लिखीं।

सनेही जी ने सामान्य जन को ध्यान में रखकर रचनाएँ की हैं। अत: उनकी कविताओं की भाषा सर्वत्र सहज सम्प्रेष्य हैं। उन्होंने खड़ी बोली हिन्दी के अतिरिक्त ब्रजभाषा में भी लिखा हैं।

प्रकाशित रचनाएँ

प्रेम पच्चीसी (1905)

गप्पाष्टक

कुसुमांजलि (1915)

कृषक - क्रन्दन (1916)

त्रिशूल तरंग (1919)

राष्ट्रीय मन्त्र (1921)

संजीवनी (1921)

राष्ट्रीय वीणा (1922)

कलामे – त्रिशूल (1930)

करुणा कादम्बिनी (1938)

चन्द्रधर शर्मा गुलेरी (1883-1922)

चन्द्रधर शर्मा गुलेरी बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्ति थे। इनकी रचनाओं में कहानियाँ, कथाएँ, आख्यान, ललित निबन्ध, गम्भीर विषयों पर विवेचनात्मक निबन्ध, शोधपत्र, समीक्षाएँ, सम्पादकीय टिप्पणियाँ, पत्र विधा में लिखी टिप्पणियाँ, समकालीन साहित्य, समाज, राजनीति आदि पर लेख तथा वक्तव्य, वैदिक / पौराणिक साहित्य, पुरातत्व, भाषा आदि पर प्रबन्ध लेख तथा टिप्पणियाँ - सभी शामिल हैं।

गुलेरी जी की शैली मुख्यतः वार्तालाप शैली है जहाँ वे किस्साबयानी के लहजे में मानो सीधे पाठक से मुखातिब होते हैं।

रचनाएँ :

कछुवा धर्म, मोरसि मोहिं कुठाँव, अमंगल के स्थान, विक्रमोर्वशी की मूल कथा, उसने कहा था (कहानी), बुद्धु का काँटा, आदि।

बाबू गुलाबराय

बाबू गुलाबराय का जन्म इटावा, उत्तर प्रदेश में हुआ। गुलाबराय जी की रचनाएँ दो प्रकार की हैं- दार्शनिक और साहित्यिक। गुलाब राय जी की दार्शनिक रचनाएँ उनके गम्भीर अध्ययन और चिन्तन का परिणाम है।

गुलाबराय जी की भाषा शुद्ध तथा परिष्कृत खड़ी बोली है।

रचनाएँ : इनकी रचनाएँ निम्न शैलियों में हैं

आलोचनात्मक रचनाएँ - नवरस, हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास, नाट्य विमर्श, आलोचना कुसुमांजलि, काव्य के रूप, सिद्धान्त और अध्ययन आदि।

दर्शन सम्बन्धी

कर्तव्य शास्त्र, तर्कशास्त्र, बौद्ध धर्म, पाश्चात्य दर्शनों का इतिहास, भारतीय संस्कृति की रूपरेखा।

बाल साहित्य : विज्ञान वार्ता, बाल प्रबोध आदि।

निबन्ध : ठलुआ क्लब, फिर निराश क्यो ?, मन की बातें, मेरी असफलताएँ, कुछ उथले कुछ गहरे।

स्फुट रचनाएँ : शान्ति धर्म, मैत्री धर्म, कर्तव्य शास्त्र, तर्क शास्त्र, नवरस, प्रबन्ध प्रभाकर, निबन्ध रत्नाकार, विज्ञान विनोद |

श्याम सुन्दर दास (1875-1945)

श्याम सुन्दर दास हिन्दी के अनन्य साधक, विद्वान, आलोचक और शिक्षाविद् थे। हिन्दी - क्षेत्र के साहित्यिक-सांस्कृतिक नवजागरण में उनका योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उन्होनें और उनके साथियों ने मिलकर 'काशी नागरी प्रचारिणी सभा' की स्थापना की। काशी नागरी प्रचारिणी सभा के माध्यम से श्री श्याम सुन्दरदास ने हिन्दी की बहुमुखी सेवा की और ऐसे महत्त्वपूर्ण कार्यों का सूत्रपात एवं संचालन किया, जिनसे हिन्दी की अभूतपूर्व उन्नति हुई।

रचनाएँ

इन्होनें परिचयात्मक और आलोचनात्मक ग्रन्थ लिखने के साथ ही कई दर्जन पुस्तकों का सम्पादन भी किया।

प्रमुख पुस्तकें

- साहित्यालोचन (1922)
- हिन्दी भाषा और साहित्य (1930)
- भाषा रहस्य (1935)
- मेरी आत्मकहानी (1941)

- भाषा विज्ञान (1923)
- रूपक रहस्य (1931)
- हिन्दी के निर्माता (1940)
- साहित्यिक लेख (1945)

छायावाद युग

'छायावाद' शब्द का सबसे पहले प्रयोग मुकुटधर पाण्डेय ने किया था। इन्होंने 'श्री शारदा' पत्रिका के वर्ष 1920 के चार अंकों में 'हिन्दी में छायावाद' शीर्षक चार लेख लिखकर छायावाद का विस्तृत और गहन विवेचन किया था। तभी से छायावाद का नाम रूढ़ हो गया।

छायावाद हिन्दी साहित्य के रोमान्टिक उत्थान की वह काव्य - धारा है, जो लगभग वर्ष 1918 से 1936 तक प्रमुख युगवाणी रही।

जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानन्दन पन्त, . महादेवी वर्मा इस काव्य धारा के प्रतिनिधि कवि माने जाते हैं

हिन्दी कविता में छायावाद का युग द्विवेदी युग के बाद आया। द्विवेदी युग की कविता नीरस उपदेशात्मक और इतिवृत्तात्मक थी। छायावाद में इसके विरुद्ध विद्रोह करते हुए कल्पनाप्रधान, भावोन्मेशयुक्त कविता रची गई। यह भाषा और भावों के स्तर पर अपने दौर के बांग्ला के सुप्रसिद्ध कवि और नोबेल पुरस्कार विजेता रवीन्द्रनाथ ठाकुर की गीतांजली से बहुत प्रभावित हुई। यह प्राचीन संस्कृत साहित्य और मध्यकालीन हिन्दी साहित्य से भी प्रभावित हुई इसमें बौद्ध दर्शन और सूफी दर्शन का भी प्रभाव लक्षित होता है।

छायावाद युग उस सांस्कृतिक और साहित्यिक जागरण का सार्वभौम विकासकाल था, जिसका आरम्भ राष्ट्रीय परिधि में भारतेन्दु युग से हुआ था।

रामचन्द्र शुक्ल ने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में लिखा है कि 'मैथिलीशरण गुप्त' मुकुटधर पाण्डेय आदि कंवि खड़ी बोली काव्य को अधिक कल्पनामय, चित्रमय और अन्तर्भाव व्यंजक रूप-रंग देने में प्रवृत हुए। यह स्वच्छन्द और नूतन पद्धति अपना रास्ता निकाल रही थी कि रवीन्द्रनाथ की रहस्यात्मक कविताओं की धूम हुई। और कई कवि एक साथ रहस्यवाद और प्रतीकवाद अथवा चित्रभाषावाद को ही एकान्त ध्येय बनाकर चल पड़े। चित्रभाषा या अभिव्यंजन पद्धति पर ही जब लक्ष्य टिक गया तब उसके प्रदर्शन के लिए लौकिक या अलौकिक प्रेम का क्षेत्र ही बाकी समझा गया। इस बँधे हुए क्षेत्र के भीतर चलने वाले काव्य ने छायावाद नाम ग्रहण किया।"

जयशंकर प्रसाद

जयशंकर प्रसाद हिन्दी कवि, नाटककार, उपन्यासकार तथा निबन्धकार थे। वे हिन्दी के छायावादी युग के चार प्रमुख स्तम्भों में से एक हैं।

प्रसाद की काव्य रचनाएँ दो वर्गों में विभक्त हैं- काव्यपथ अनुसन्धान की रचनाएँ और रससिद्ध रचनाएँ। आँसू, लहर तथा कामायनी दूसरे वर्ग की रचनाएँ हैं। उन्होंने काव्य रचना ब्रजभाषा में आरम्भ की ओर धीरे-धीरे खड़ी बोली को अपनाते गए।

काव्य क्षेत्र में प्रसाद की कीर्ति का मूलाधार 'कामायनी' है। खड़ी बोली का यह अद्वितीय महाकाव्य मनु और श्रद्धा को आधार बनाकर रचित मानवता को विजयिनी बनाने का सन्देश देता हैं।

कई दृष्टि से जयशंकर 'प्रसाद' छायावाद के पहले कवि हैं। वर्ष 1918 में प्रकाशित उनका काव्य संग्रह 'झरना' इस नए ढंग की कविताओं का पहला संकलन हैं।

प्रमुख रचनाएँ

1. उर्वशी (1909)
2. वन मिलन (1909)
3. प्रेम राज्य (1909)
4. अयोध्या का उद्धार (1910)
5. शोकोच्छवास (1910)
6. वभ्रुवाहन (1911)

7. कानन कुसुम (1913)

8. प्रेमपार्थिक (1914)

9. महाराणा का महत्व (1914)

10. चित्रधार (1918)

11. झरना (1918)

12. आँसू (1925)

13. लहर (1933)

14. कामायनी (1935)

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' हिन्दी कविता के छायावादी युग के चार प्रमुख स्तम्भों में से एक माने जाते हैं। इनका जन्म बंगाल की महिषादल रियासत (जिला मेदिनीपुर) में हुआ था।

निराला अपने समकालीन अन्य कवियों से अलग थे। उन्होंने कविता में कल्पना का सहारा बहुत कम लिया है और यथार्थ को प्रमुखता से चित्रित किया है। वे हिन्दी में मुक्तछन्द के प्रर्वतक भी माने जाते हैं। निराला की कविता जूही की कली (मुक्तक छन्द)

निराला ने वर्ष 1920 के आसपास से लेखन कार्य आरम्भ किया। सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की काव्य कला की सबसे बड़ी विशेषता है चित्रण - कौशल। आन्तरिक भाव

हो या बाह्य जगत के दृश्य रूप संगीतात्मक ध्वनियाँ हो या रंग और गंध, सजीव चरित्र हों या प्राकृतिक दृश्य, सभी अलग-अलग लगने वाले तत्वों को घुला - मिलाकर निराला ऐसा जीवन्त चित्र उपस्थित करते हैं कि पढ़ने वाला उन चित्रों के माध्यम से ही निराला के मर्म तक पहुँच सकता है। निराला के चित्रों में उनका भावबोध ही नहीं उनका चिन्तन भी समाहित रहता है। इसलिए उनकी बहुत सी कविताओं में दार्शनिक गहराई उत्पन्न हो जाती है। रचनाएँ

अनामिका (1923), परिमल (1930), गीतिका (1936), अनामिका द्वितीय (1939), तुलसीदास (1939), कुकुरमुत्ता (1942),

अणिमा (1943), बेला (1946), नए पत्ते (1946), अर्चना (1950), आराधना (1953), सांध्य काकली (1954), अपूरा